AIRO JOURNALS

Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International

ISSN: 2320-3714
Volume:3 Issue:3
September 2021
Impact Factor: 6.3
Subject: Arts

महाराष्ट्र में 19वीं सदी में सामाजिक–धार्मिक आंदोलन का अध्ययन

Yograj Manohar Ther [1] , Dr. Reshma Ara [2]

1 Research Scholar , Department of History , Sri Satya Sai University of Technology & Medical Sciences , Sehore , M.P.

2 Research Guide , Department of History , Sri Satya Sai University of Technology & Medical Sciences , Sehore , M.P.

DECLARATION::I AS AN AUTHOR OF THIS PAPER / ARTICLE, HEREBY DECLARE THAT THE PAPER SUBMITTED BY ME FOR PUBLICATION IN THIS JOURNAL IS COMPLETELY MY OWN PREPARED PAPER.. I HAVE CHECKED MY PAPER THROUGH MY GUIDE/SUPERVISOR/EXPERT AND IF ANY ISSUE REGARDING COPYRIGHT/PATENT/ PLAGIARISM/ OTHER REAL AUTHOR ARISE, THE PUBLISHER WILL NOT BE LEGALLY RESPONSIBLE. . IF ANY OF SUCH MATTERS OCCUR PUBLISHER MAY REMOVE MY CONTENT FROM THE JOURNAL.

सारांश

19वीं शताब्दी के महाराष्ट्र ने सामाजिक सुधार आंदोलनों के कई रुझानों का अनुभव किया, जिससे समाज में जागृति आई। यह सामान्य रूप से भारत में और विशेष रूप से महाराष्ट्र में कई कारकों का प्रत्यक्ष परिणाम था। वे कारक थे जैसे अंग्रेजी शिक्षा, पश्चिमी उदार विचारकों से संपर्क, ब्रिटिश प्रशासन, ईसाई मिशनरियों का काम, समानता का विचार, कानून का शासन और प्रेस द्वारा दिया गया योगदान। अंग्रेजी शिक्षा ने भारतीयों को अज्ञानता, उदासीनता, सुस्ती, अंधविश्वास, भाग्यवाद और आलस्य के खिलाफ विद्रोह करने के लिए प्रेरित किया। पश्चिमी विचारों को एक दूसरे तक पहुँचाने में अंग्रेजी भाषा ने बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसने सभी वर्गों, वर्गों, संस्कृतियों और भाषा समूहों के लोगों के लिए एक साझा मंच के रूप में काम किया। इसने भारतीय धर्मों और सामाजिक जीवन में खामियों, कमियों और खामियों को सभी के ध्यान में लाया और उन्हें पश्चिमी साहित्य में वकालत की गई उदारवादी अवधारणा का पालन करने के लिए प्रेरित किया। वर्ष १८१८ महाराष्ट्र में आधुनिक समय की शुरुआत थी, जहां लोगों का सामना नए शासकों और उनके जीवन के तरीके से हुआ जो उनके लिए नया था। लार्ड मोइरे का कहना है कि यद्यपि, अंग्रेज भारत में व्यापारियों के रूप में आए और भारत का व्यापक रूप से शोषण करने के लिए एक राजनीतिक शक्ति बन गए, उन्होंने समय बीतने के साथ समाज में शांति और व्यवस्था स्थापित करने में सक्षम बनाने के लिए एक व्यापक दृष्टिकोण अपनाया।

मुख्यशब्द–महाराष्ट्र,19वीं सदी,सामाजिक–धार्मिक आंदोलन,सामाजिक सुधार,समाज में जागृति

प्रस्तावना

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN: 2320-3714
Volume:3 Issue:3
September 2021
Impact Factor: 6.3
Subject: Arts

महाराष्ट्र गुजरात के साथ–साथ तत्कालीन बॉम्बे राज्य का हिस्सा था। यह लोकप्रिय रूप से बॉम्बे प्रेसीडेंसी के रूप में जाना जाता था, जिसे अंग्रेजों द्वारा बनाया गया था जब वे भारत के पश्चिमी हिस्से की निर्विवाद शक्ति बन गए थे। महाराष्ट्र 1 मई 1960 को एक अलग राज्य के रूप में भाषाई आधार पर अस्तित्व में आया। इसके उत्तरी भाग में गुजरात है, इसके उत्तर पूर्व और पूर्वी सीमा में मध्य प्रदेश है, इसके दक्षिणी भाग में गोवा और कर्नाटक हैं जबकि अरब सागर पश्चिमी सीमा में स्थित है। महाराष्ट्र देश के लगभग ३,०६,०५६ वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैला है। महाराष्ट्र में मराठा समुदाय का दबदबा है, जो उत्तर पूर्व और उत्तर से आर्यों के प्रवेश का प्रत्यक्ष परिणाम है। यह बाद में मजबूत स्थानीय आबादी के साथ मिला और स्थानीय शब्दों और अभिव्यक्तियों को अपनी भाषा में समाहित कर लिया।

19वीं शताब्दी में भारत ने देश के विभिन्न हिस्सों में किए गए सुधार आंदोलनों की एक श्रृंखला देखी। ये आंदोलन आधुनिक तर्ज पर भारतीय समाज के पुनर्गठन की ओर उन्मुख थे। यह इकाई इन सामाजिक–धार्मिक सुधार आंदोलनों का एक सामान्य और विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है। यह इन आंदोलनों के महत्व को भी उजागर करना चाहता है। अठारहवीं और उन्नीसवीं शताब्दी के दौरान अंग्रेजों द्वारा भारत की विजय ने भारतीय सामाजिक संस्थाओं की कुछ गंभीर कमजोरियों और कमियों को उजागर किया। एक परिणाम के रूप में कई व्यक्तियों और आंदोलनों ने समाज में सुधार और पुनरुत्थान की दृष्टि से सामाजिक और धार्मिक प्रथाओं में बदलाव लाने की मांग की। चर्चा के लिए एक महत्वपूर्ण प्रश्न उन ताकतों के बारे में है जिन्होंने भारत में इस जागृति को उत्पन्न किया। क्या यह पश्चिम के प्रभाव का परिणाम था? या यह केवल औपनिवेशिक हस्तक्षेप की प्रतिक्रिया थी? इसका एक अन्य आयाम भारतीय समाज में हो रहे परिवर्तनों से संबंधित है जिससे नए वर्गों का उदय हुआ। इस परिप्रेक्ष्य में सामाजिक–धार्मिक आंदोलनों को औपनिवेशिक भारत में नए उभरते मध्यम वर्ग की सामाजिक आकांक्षाओं की अभिव्यक्ति के रूप में देखा जा सकता है। सुधार आंदोलनों पर प्रारंभिक ऐतिहासिक लेखन ने मुख्य रूप से पश्चिम के प्रभाव, विशेष रूप से अंग्रेजी शिक्षा और साहित्य, ईसाई धर्म, प्राच्यवादी अनुसंधान, यूरोपीय विज्ञान और दर्शन, और पश्चिमी सभ्यता के भौतिक तत्वों के प्रभाव का पता लगाया है। उन्नीसवीं सदी में समाज में पुनर्योजी प्रक्रिया पर पश्चिमी प्रभाव के महत्व को नकारा नहीं जा सकता है। हालाँकि, यदि हम सुधार की इस पूरी प्रक्रिया को औपनिवेशिक परोपकार की अभिव्यक्ति के रूप में देखते हैं और अपने आप को केवल इसके सकारात्मक आयामों को देखने तक सीमित रखते हैं, तो हम इस घटना के जटिल चरित्र के साथ न्याय करने में विफल होंगे। सुधार आंदोलनों को औपनिवेशिक घुसपैठ से उत्पन्न चुनौती की प्रतिक्रिया के रूप में देखा जाना चाहिए। वे वास्तव में न केवल समाज में सुधार के प्रयासों के रूप में महत्वपूर्ण थे, बल्कि इससे भी अधिक उपनिवेशवाद द्वारा उत्पन्न नई स्थिति के साथ संघर्ष करने की इच्छा की अभिव्यक्ति के रूप में थे।

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN: 2320-3714
Volume:3 Issue:3
September 2021
Impact Factor: 6.3
Subject: Arts

सुधारों का तरीका और दायरा

उन्नीसवीं सदी के सुधार आंदोलन विशुद्ध रूप से धार्मिक आंदोलन नहीं थे। वे सामाजिक–धार्मिक आंदोलन थे। बंगाल में राममोहन राय, महाराष्ट्र में गोपाल हरि देशमुख (लोकहितवादी) और आंध्र में वीरसलिंगम जैसे सुधारकों ने ष्राजनीतिक लाभ और सामाजिक आरामष् के लिए धार्मिक सुधार की वकालत की। आंदोलनों और उनके नेताओं के सुधार के दृष्टिकोण को धार्मिक और सामाजिक मुद्दों के बीच अंतर्संबंध की मान्यता की विशेषता थी। उन्होंने सामाजिक संस्थाओं और प्रथाओं में परिवर्तन लाने के लिए धार्मिक विचारों का उपयोग करने का प्रयास किया। उदाहरण के लिए, केशुब चंद्र सेन ने समाज में जाति भेद को मिटाने के लिए ष्मानवता की ईश्वरत्व और भाईचारे की एकताष् की व्याख्या की। सुधार आंदोलनों के दायरे में आने वाली प्रमुख सामाजिक समस्याएं थींरू

महिलाओं की मुक्ति जिसमें सती, शिशुहत्या, बाल और विधवा विवाह को लिया गया था

जातिवाद और अस्पृश्यता

समाज में प्रबुद्धता लाने के लिए शिक्षा

धार्मिक क्षेत्र में मुख्य मुद्दे थेरू

मूर्तिपूजा

बहुदेववाद

धार्मिक अंधविश्वास

पुजारियों द्वारा शोषण

सामाजिक–धार्मिक प्रथाओं में सुधार के प्रयासों में कई तरीके अपनाए गए। चार प्रमुख रुझान इस प्रकार हैंरू

भीतर से सुधार

भीतर से सुधार की तकनीक राममोहन राय द्वारा शुरू की गई थी और उन्नीसवीं शताब्दी के दौरान इसका पालन किया गया था। इस पद्धति के पैरोकारों का मानना था कि किसी भी सुधार को प्रभावी होने के लिए समाज के भीतर से ही उभरना पड़ता है। नतीजतन, उनके प्रयासों का मुख्य जोर लोगों में जागरूकता की भावना पैदा करना था। उन्होंने ट्रैक्ट प्रकाशित करके और विभिन्न सामाजिक समस्याओं पर वाद–विवाद और

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN: 2320-3714
Volume:3 Issue:3
September 2021
Impact Factor: 6.3
Subject: Arts

चर्चाओं का आयोजन करके ऐसा करने का प्रयास किया। सती के खिलाफ राममोहन का अभियान, विधवा विवाह पर विद्यासागर के पर्चे और बी.एम. सहमति की आयु बढ़ाने के मालाबारी के प्रयास इसके उदाहरण हैं।

विधान के माध्यम से सुधार

दूसरी प्रवृत्ति का प्रतिनिधित्व विधायी हस्तक्षेप की प्रभावकारिता में विश्वास द्वारा किया गया था। इस पद्धति के पैरोकारों (बंगाल में केशुब चंद्र सेन, महाराष्ट्र में महादेव गोविंद रानाडे और आंध्र में वीरेशलिंगम) का मानना था कि राज्य द्वारा समर्थित होने तक सुधार के प्रयास वास्तव में प्रभावी नहीं हो सकते। इसलिए, उन्होंने सरकार से विधवा विवाह, नागरिक विवाह और सहमति की आयु में वृद्धि जैसे सुधारों के लिए विधायी मंजूरी देने की अपील की। हालाँकि, वे यह महसूस करने में विफल रहे कि सामाजिक सुधार में ब्रिटिश सरकार की रुचि उसके अपने संकीर्ण राजनीतिक–आर्थिक विचारों से जुड़ी हुई थी और यह तभी हस्तक्षेप करेगी जब इससे उसके अपने हितों पर प्रतिकूल प्रभाव न पड़े। इसके अलावा, वे यह महसूस करने में भी विफल रहे कि औपनिवेशिक समाज में परिवर्तन के साधन के रूप में कानून की भूमिका सीमित थी क्योंकि लोगों की मंजूरी की कमी थी।

परिवर्तन के प्रतीक के माध्यम से सुधार

तीसरी प्रवृत्ति गैर–अनुरूपतावादी व्यक्तिगत गतिविधि के माध्यम से परिवर्तन के प्रतीक बनाने का प्रयास थी। यह श्डेरोजियनश या श्यंग बंगालश तक सीमित था जो सुधार आंदोलन के भीतर एक कट्टरपंथी धारा का प्रतिनिधित्व करते थे। इस समूह के प्रमुख सदस्य दक्षिणरंजन मुखर्जी, राम गोपाल घोष और कृष्ण मोहन बनर्जी थे, जो परंपरा की अस्वीकृति और स्वीकृत सामाजिक मानदंडों के खिलाफ विद्रोह के पक्ष में थे। वे ष्पश्चिम से नए विचारों को पुनर्जीवित करनेष से अत्यधिक प्रभावित थे और उन्होंने सामाजिक समस्याओं के प्रति एक अडिग रूप से तर्कसंगत दृष्टिकोण प्रदर्शित किया। उनके द्वारा अपनाई गई पद्धति की एक बड़ी कमजोरी यह थी कि यह भारतीय समाज की सांस्कृतिक परंपराओं को आकर्षित करने में विफल रही और इसलिए बंगाल में नए उभरते मध्यम वर्ग ने इसे स्वीकार करने के लिए बहुत अपरंपरागत पाया।

सामाजिक कार्य के माध्यम से सुधार

चौथी प्रवृत्ति सामाजिक कार्य के माध्यम से सुधार की थी जैसा कि ईश्वर चंद्र विद्यासागर, आर्य समाज और रामकृष्ण मिशन की गतिविधियों में स्पष्ट था। उनके बीच यह स्पष्ट रूप से मान्यता थी कि बिना सहायक सामाजिक कार्य के किए जाने पर विशुद्ध बौद्धिक प्रयास की सीमाएं हैं। उदाहरण के लिए, विद्यासागर व्याख्यान

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN: 2320-3714
Volume:3 Issue:3
September 2021
Impact Factor: 6.3
Subject: Arts

और ट्रैक्ट के प्रकाशन के माध्यम से विधवा पुनर्विवाह की वकालत करने से संतुष्ट नहीं थे। उन्होंने विधवा विवाह के कारण के साथ अपनी पहचान बनाई और इस काम के लिए अपना पूरा जीवन, ऊर्जा और पैसा खर्च किया। इसके बावजूद, वह केवल कुछ विधवा विवाहों को प्राप्त करने में सक्षम था। व्यावहारिक रूप से कुछ महत्वपूर्ण हासिल करने में विद्यासागर की अक्षमता औपनिवेशिक भारत में सामाजिक सुधार के प्रयासों की सीमाओं का संकेत थी। आर्य समाज और रामकृष्ण मिशन ने भी सामाजिक कार्य किया जिसके माध्यम से उन्होंने सुधार और उत्थान के विचारों को प्रसारित करने का प्रयास किया। उनकी सीमा उनकी ओर से एक अपर्याप्त अहसास थी कि सामाजिक और बौद्धिक स्तरों पर सुधार समाज के समग्र चरित्र और संरचना के साथ अविभाज्य रूप से जुड़ा हुआ है। अन्य सुधार आंदोलनों की तुलना में, वे औपनिवेशिक राज्य के हस्तक्षेप पर कम निर्भर थे और उन्होंने सामाजिक कार्य के विचार को एक पंथ के रूप में विकसित करने का प्रयास किया।

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन और मुंबई

मुंबई में सबसे महत्वपूर्ण प्रांतीय संघ मुंबई प्रेसीडेंसी एसोसिएशन और बॉम्बे एसोसिएशन के रूप में सामने आए, जिसने 1885 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की नींव का मार्ग प्रशस्त किया। मुंबई से कांग्रेस के पहले सत्र में एक सबसे बड़ा प्रतिनिधिमंडल मौजूद था। कांग्रेस के लगभग सभी कार्यक्रम मुंबई में नरमपंथी नेताओं के अधीन हुए। 1905 में बंगाल के विभाजन के बाद तिलक ने सबसे पहले मुंबई में स्वदेशी आंदोलन की वकालत की। तिलके, महात्मा के बाद, गांधीजी ने भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन का नेतृत्व संभाला, मुंबई में लगभग सभी सत्याग्रह आंदोलनों को असहयोग अवज्ञा आंदोलन और भारत छोड़ो आंदोलन के रूप में शुरू किया। मुंबई भारत में पहले इलेक्ट्रिक लोकोमोटिव का केंद्र था, जो 1925 में विक्टोरिया टर्मिनस से कुर्ला तक शुरू हुआ था। जे.आर.डी. ताला ने 15 अक्टूबर, 1932 को कराची से मुंबई के लिए उड़ान भरकर मुंबई में नागरिक उड्डयन का बीड़ा उठाया। मुंबई सैनिकों, सैन्य, बेड़े, शाही भारतीय नौसेना और औद्योगिक सामानों की आवाजाही का आधार था। ऐसा इसलिए भी है क्योंकि 15 अगस्त 1947 को भारत के विभाजन के बाद पाकिस्तान से आए शरणार्थियों का केंद्र मुंबई में भाषा के आधार पर मुंबई राज्य के पुनर्गठन की मांग को बल मिला, जिसे संयुक्त महाराष्ट्र आंदोलन के नाम से जाना जाने लगा। इसने 1960 में पुलिस फायरिंग में 105 लोगों की बलि देने के बाद मुंबई के साथ महाराष्ट्र राज्य को अपनी राजधानी के रूप में घोषित किया।

सुधार आंदोलनों में रुझान

यद्यपि, 18वीं शताब्दी रूढ़िवादी विचारों और प्रथाओं के अधीन थी, 19वीं शताब्दी के महाराष्ट्र ने सुधार आंदोलनों के कई रुझानों का अनुभव किया, जिससे समाज में जागृति आई। यह सामान्य रूप से भारत में और विशेष रूप

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN: 2320-3714
Volume:3 Issue:3
September 2021
Impact Factor: 6.3
Subject: Arts

से महाराष्ट्र में कई कारकों का प्रत्यक्ष परिणाम था। वे कारक थे जैसे अंग्रेजी शिक्षा, पश्चिमी उदार विचारकों से संपर्क, ब्रिटिश प्रशासन, ईसाई मिशनरियों का काम, समानता का विचार, कानून का शासन और प्रेस द्वारा दिया गया योगदान। अंग्रेजी शिक्षा ने भारतीयों को अज्ञानता, उदासीनता, सुस्ती, अंधविश्वास, भाग्यवाद और आलस्य के खिलाफ विद्रोह करने के लिए प्रेरित किया। पश्चिमी विचारों को एक दूसरे तक पहुँचाने में अंग्रेजी भाषा ने बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसने सभी वर्गों, वर्गों, संस्कृतियों और भाषा समूहों के लोगों के लिए एक साझा मंच के रूप में काम किया। इसने भारतीय धर्मों और सामाजिक जीवन में खामियों, कमियों और खामियों को सभी के ध्यान में लाया और उन्हें पश्चिमी साहित्य में वकालत की गई उदारवादी अवधारणा का पालन करने के लिए प्रेरित किया। वर्ष १८१८ महाराष्ट्र में आधुनिक समय की शुरुआत थी, जहां लोगों का सामना नए शासकों और उनके जीवन के तरीके से हुआ जो उनके लिए नया था। लार्ड मोइरे का कहना है कि यद्यपि, अंग्रेज भारत में व्यापारियों के रूप में आए और भारत का व्यापक रूप से शोषण करने के लिए एक राजनीतिक शक्ति बन गए, उन्होंने समय बीतने के साथ समाज में शांति और व्यवस्था स्थापित करने में सक्षम बनाने के लिए एक व्यापक दृष्टिकोण अपनाया। उस दृष्टिकोण को साकार करने के लिए लॉर्ड मोइरे ने मालिकों को कई पत्र लिखे, यानी काउंट ऑफ डायरेक्टर्स को। माउंटस्टुअर्ट एलफिंस्टन जैसे ब्रिटिश अधिकारी जो भारत आए थे वे उदार थे और वे कारणों में विश्वास करते थे। उन्होंने ऐसे स्कूल और कॉलेज खोले जहाँ भारतीय छात्रों को अंग्रेजी साहित्य, फ्रांसिस बेकन, डेविड ह्यूम, मिडलटन, जॉर्ज बर्कले, कॉन्डोरसेट, जोसेफ बटलर और कई अन्य उदार साहित्यकारों के विचारों का अध्ययन करने का अवसर मिला। महाराष्ट्र में पश्चिमी शिक्षा की शुरुआत करने वाले ब्रिटिश अधिकारियों में माउंटस्टुअर्ट–एल्फिंस्टन का योगदान कहीं अधिक था। वह सोलह वर्ष की आयु में भारत आए, पेशवा अदालत, पुणे में ब्रिटिश रेजिडेंट के सहायक के रूप में राजनयिक सेवाओं में काम किया। वह १८१८ में नागपुर में ब्रिटिश निवासी बन गए। उन्हें डेक्कन के आयुक्त के रूप में नियुक्त किया गया और अगले वर्ष, वे बॉम्बे १८२७ के गवर्नर बने। एलफिंस्टन ने टी। एर्स्किन जैसे लोगों के प्रभाव के कारण महाराष्ट्र में शिक्षा की एक प्रणाली की स्थापना की। , कोलब्रोक, जॉन लोके और जेरेमी बेंथन। उन्होंने पारंपरिक संस्थानों से सहयोग प्राप्त किया और महाराष्ट्र में उच्च वर्गों को शिक्षित किया। उन्होंने देशी स्कूलों में पढ़ाने के तरीके में सुधार किया, स्कूलों की संख्या में वृद्धि की, स्कूल की किताबों की आपूर्ति की, निचली कक्षाओं को शिक्षा में निर्देश प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित किया, जो उनके लिए सस्ती थीं।

एलफिंस्टन ने यूरोपीय विज्ञान पढ़ाने के लिए स्कूलों की स्थापना की और अपने अधिकार क्षेत्र में शिक्षा की उच्च शाखाओं में सुधार किया। उन्होंने नैतिक और भौतिक विज्ञान की पुस्तकों को देशी भाषाओं में प्रकाशित करने के लिए कुछ राशि प्रदान की। उन्होंने ज्ञान प्राप्त करने के लिए एक शास्त्रीय भाषा के रूप में अंग्रेजी सिखाने के लिए भी प्रदान किया और खोजों का ज्ञान यूरोपीय देशों में हुआ। एलफिंस्टन ने लोगों की शिक्षा के

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN: 2320-3714
Volume:3 Issue:3
September 2021
Impact Factor: 6.3
Subject: Arts

लिए पैसे का इस्तेमाल किया, जो पेशवाओं के तहत ब्राह्मणों को वितरित करने के लिए इस्तेमाल किया गया था। उनके प्रयासों से महाराष्ट्र में जागरूकता पैदा हुई, अंग्रेजी पढ़े–लिखे लोगों ने मौजूदा पुराने हठधर्मिता, सिद्धांतों पर सवाल उठाना शुरू कर दिया और अज्ञानता, उदासीनता, अंधविश्वास, सुस्ती और भाग्यवाद के खिलाफ विद्रोह कर दिया, जिसने विचार को जन्म दिया और सामान्य रूप से सामाजिक और धार्मिक जागृति पैदा की। अंग्रेजी शिक्षा के अलावा, ईसाई मिशनरियों के काम ने लोगों को सामाजिक और धार्मिक जीवन में अनुभव जागरूकता पैदा करने और यूरोप में लोगों की तरह जीवन जीने के लिए प्रेरित किया। मिशनरियों ने हिंदू धर्म की आलोचना की क्योंकि बैक वार्ड धर्म ने हिंदुओं को ईसाई धर्म में परिवर्तित करना शुरू कर दिया, जिससे शिक्षित भारतीयों को चोट लगी, जिन्होंने अपने सामाजिक और धार्मिक जीवन में सुधार करने का दृढ़ संकल्प किया। समानता का विचार तब उत्पन्न हुआ जब मिशनरियों ने सभी भारतीयों को उनकी जाति, पंथ और नस्ल के बावजूद अपने स्कूलों में प्रवेश दिया। उन्होंने लड़कियों के लिए स्कूल भी खोले, जो विद्वान भारतीयों से अपील करते थे और उन्हें अपने सामाजिक और धार्मिक जीवन में जागरूकता पैदा करने के लिए प्रेरित करते थे। मिशनरियों ने अपनी सेवाओं को गरीबों, शारीरिक और मानसिक रूप से विकलांग लोगों के प्रति समर्पित कर दिया जिसने भारतीयों को सुधार आंदोलन शुरू करने के लिए प्रेरित किया। अंतिम लेकिन कम से कम, प्रिंटिंग प्रेस का योगदान और भारत के अतीत के गौरव को पुनर्जीवित करने के लिए प्राच्यवादियों का काम, महाराष्ट्र के साथ–साथ भारत में उन्नीसवीं शताब्दी में सामाजिक–धार्मिक सुधार आंदोलनों की शुरुआत करने का एक कारण था।

निष्कर्ष

19वीं शताब्दी में भारत ने देश के विभिन्न हिस्सों में किए गए सुधार आंदोलनों की एक श्रृंखला देखी। ये आंदोलन आधुनिक तर्ज पर भारतीय समाज के पुनर्गठन की ओर उन्मुख थे। यह इकाई इन सामाजिक–धार्मिक सुधार आंदोलनों का एक सामान्य और विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है। यह इन आंदोलनों के महत्व को भी उजागर करना चाहता है। अठारहवीं और उन्नीसवीं शताब्दी के दौरान अंग्रेजों द्वारा भारत की विजय ने भारतीय सामाजिक संस्थाओं की कुछ गंभीर कमजोरियों और कमियों को उजागर किया। एक परिणाम के रूप में कई व्यक्तियों और आंदोलनों ने समाज में सुधार और पुनरुत्थान की दृष्टि से सामाजिक और धार्मिक प्रथाओं में बदलाव लाने की मांग की। चर्चा के लिए एक महत्वपूर्ण प्रश्न उन ताकतों के बारे में है जिन्होंने भारत में इस जागृति को उत्पन्न किया। उन्नीसवीं सदी के सुधार आंदोलन विशुद्ध रूप से सामाजिक–धार्मिक आंदोलन थे। महाराष्ट्र में गोपाल हरि देशमुख (लोकहितवादी) जैसे सुधारकों ने राजनीतिक लाभ और सामाजिक आराम के लिए धार्मिक सुधार की वकालत की। आंदोलनों और उनके नेताओं के सुधार के दृष्टिकोण को धार्मिक और

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN: 2320-3714
Volume:3 Issue:3
September 2021
Impact Factor: 6.3
Subject: Arts

सामाजिक मुद्दों के बीच अंतर्संबंध की मान्यता की विशेषता थी। उन्होंने सामाजिक संस्थाओं और प्रथाओं में परिवर्तन लाने के लिए धार्मिक विचारों का उपयोग करने का प्रयास किया। उदाहरण के लिए, केशुब चंद्र सेन ने समाज में जाति भेद को मिटाने के लिए मानवता की ईश्वरत्व और भाईचारे की एकता की व्याख्या की।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

लाल, वी. (2006)। संयुक्त राज्य अमेरिका। लाल, बी.वी., रीव्स, पी., और राय, आर. (सं.) में। भारतीय डायस्पोरा का विश्वकोश (पीपी। 314–326)। होनोलूलूरू यूनिवर्सिटी ऑफ़ हवाई प्रेस.

रामनाथ, एम। (2011)। हज टू यूटोपियारू कैसे ग़दर आंदोलन ने वैश्विक कट्टरवाद को रेखांकित किया और ब्रिटिश साम्राज्य को उखाड़ फेंकने का प्रयास किया। बर्कले, यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया प्रेस।

भट्टे, पी. (2014)। भारतीय स्वतंत्रता क्रांतिकारियों और उगते सूरज की गतिविधियाँ। क्योटो विश्वविद्यालय अनुसंधान सूचना भंडार, 11,117–136।

बोस, एस. (2013)। महामहिम के विरोधीरू सुभाष चंद्र बोस और साम्राज्य के खिलाफ भारत का संघर्ष। नई दिल्लीरू पेंगुइन बुक्स इंडिया।

बोस, एस.के., और बोस, एस (सं.) (2002)। आजाद हिंदरू राइटिंग्स एंड स्पीचेस, 1941–1943 (वॉल्यूम 11)। भारतरू ओरिएंट ब्लैकस्वान.

गणचारी, ए. (2005). एक औपनिवेशिक स्थिति में राष्ट्रवाद और सामाजिक सुधार। नई दिल्लीरू कल्पाज प्रकाशन।

ह्यूजेस, टी. एल. (2002)। अफगानिस्तान के लिए जर्मन मिशन, 1915–1916। जर्मन स्टडीज रिव्यू, २५(३), ४४७–४७६।

हुसैन, आई. (2005). बराकतुल्लाह रू आधा भुला दिया गया क्रांतिकारी। भारतीय इतिहास कांग्रेस की कार्यवाही, ६६, १०६१–१०७२।

लेब्रा, जे। (2008)। भारतीय राष्ट्रीय सेना और जापान। सिंगापुररू इंस्टीट्यूट ऑफ साउथईस्ट एशियन स्टडीज.

लोचन, ए. (2006). थाईलैंड। लाल, बी.वी., रीव्स, पी., और राय, आर. (सं.) में। भारतीय डायस्पोरा का विश्वकोश (पीपी। 189–194)। होनोलूलूरू यूनिवर्सिटी ऑफ़ हवाई प्रेस.

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN: 2320-3714
Volume:3 Issue:3
September 2021
Impact Factor: 6.3
Subject: Arts

मैकक्वाड, जे। (2016)। द न्यू एशिया ऑफ़ रास बिहारी बोसरू इंडिया, जापान एंड द लिमिट्स ऑफ़ द इंटरनेशनल, १९१२–१९४५। जर्नल ऑफ वर्ल्ड हिस्ट्री, 641–667।

प्रियदर्शन, जी, और एस जयप्रकाश। एझावर ओरु चरित्र पटानम (एझावररू ए हिस्टोरिकल स्टडी)। तिरुवनंतपुरमरू पूर्णा बुक्स, 2011।

******